कुँवर नारायण के काव्य में जीवन-दृष्टि एवं मूल्य-बोध

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

कुमार सौरभ

Registration No. : TZ202249 of 2020

मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ

हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय

तेजपुर, असम : 784028

दिसम्बर : 2022

उपसंहार

कुँवर नारायण आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। बचपन में पारिवारिक सदस्यों पहले माँ और फ़िर बड़ी बहन की मृत्यु ने कवि के मानस पर गहरा असर डाला। कवि के अंतर्मुखी स्वभाव के लिए वह पारिवारिक त्रासदी भी ज़िम्मेदार है जिसने उन्हें बचपन में अकेला कर दिया। 'आत्मजयी' जैसे खंडकाव्य में मृत्यु के प्रति जो चिंतन का भाव प्रकट हुआ है उसके पीछे भी कवि का वह त्रासद अतीत ज़िम्मेदार है। मृत्यु पर चिंतन करने के क्रम में भी कुँवर नारायण जीवन के प्रति निराशावादी नहीं हुए हैं। उन्होंने हमेशा अपनी कविताओं के माध्यम से जीवन की सृजनात्मक संभावनाओं को तलाशा है। उन जीवन-मूल्यों को हम इनकी कविताओं में अभिव्यक्त होते हुए पाते हैं जिनमें इस भौतिक जगत के अतिक्रमण की शक्ति है। आज जब व्यावसायिकता की बाढ़ में सबकुछ डूबता हुआ नज़र आ रहा है, ऐसे समय में कुँवर नारायण की कविताएँ जीवन-रक्षा के श्रेष्ठतम उपायों को खोजती हुई नज़र आती है।

'कुँवर नारायण के काव्य में जीवन-दृष्टि एवं मूल्य-बोध'विषयक इस शोध कार्य के निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि कुँवर नारायण की कविताओं में उन जीवन-मूल्यों का संधान है जिसे बाज़ार और विज्ञापनों के लुभावने प्रलोभन ने हमसे छीन लिया है। उनकी कविताओं में जिस जीवन-सत्य की बात की जाती है उसका मूल भी सही जीवन-मूल्यों की पहचान करा सकने वाली शक्ति से है। ये कविताएँ उन ताकतों से मुठभेड़ करती हैं जो मनुष्य को यंत्र में तब्दील करने वाली प्रक्रिया की मददगार हैं।उन्होंने कविता को कभी भी व्यावसायिकता से जोड़कर नहीं देखा। उनके लिए कविता की दुनिया एक ऐसी दुनिया रही है जिससे गुज़रते हुए हम अपनी ज़िन्दगी को बृहत्तर परिप्रेक्ष्य और संभावनाओं के साथ देख सकते हैं। आज जब हमारे आस-पास भूमंडलीकरण, बाज़ारवाद और मीडिया की भाषा का शोर है ऐसे समय में कुँवर जी की कविताओं में हम उन ज़रूरी आवाज़ों को सुन सकते हैं जिनका संबंध मनुष्य के स्थायी

जीवन-मूल्यों से है। वे अपनी कविताओं में एक विचारक की तरह जीवन की सार्थकता के विषय में सोचते हैं। मानव-जीवन को बेहतर बनाने वाली संभावनाओं को तलाशना कवि का मुख्य ध्येय है। जीवन को उदात्त बनाने की प्रक्रिया में संलग्न कवि दार्शनिक प्रतीतियों से लेकर ऐतिहासिक चरित्रों तक निरंतर यात्रा करता है।'आत्मजयी', 'कुमारजीव' और 'वाजश्रवा के बहाने' जैसी कृतियाँ इसी यात्रा का प्रतिफलन हैं। कुँवर नारायण की कविताओं में ऐतिहासिक या मिथकीय घटना से ज़्यादा वह जीवनानुभव मायने रखता है जो इन घटनाओं से प्राप्त होता है। ये कविताएँ इतिहास को देखने का एक भिन्न दृष्टिकोण देती हैं। इतिहास सिर्फ़ युद्धों, राजाओं और शासकों का दस्तावेज नहीं है। कौन किसको पराजित कर गद्दी पर बैठा इससे ज़्यादा महत्त्व के जीवनानुभव भी इतिहास के मार्फ़त प्राप्त किये जा सकते हैं। कुँवर नारायण की कविताओं में उन्हीं मूल्यवान जीवनानुभवों की तलाश है।कवि का इतिहासबोध सिंहासनों और शासकों की निग़ाह से इतिहास को नहीं देखता, वह इतिहास में कबीर, मीर और ग़ालिब के पैरों के निशान ढूँढता है। और, उस भावकोण से दुनिया को देखता है जहाँ कलागत और सांस्कृतिक चेष्टाएँ महत्त्व पाती हों।कुँवर जी इतिहास के पृष्ठों को अपनी कविताओं में इस तरह से खोलते हैं कि मनुष्यता के रंग उभरकर सामने आएँ।इन कविताओं का पाठक यह महसूस कर सकता है कि मनुष्यता के वर्तमान और भावी संकटों से बाहर निकालने में इतिहास का पुनर्पाठ कारगर हो सकता है।

कुँवर नारायण की कविताओं में अतीत के स्मरण का भी मुख्य उद्देश्य स्थायी जीवन-मूल्यों का जीवन में पुनर्वास करना है।कुँवरनारायण की कविताएँ उन जीवन-मूल्यों को संपोषित करती हैं जो मनुष्य के व्यक्तित्व को अमरता प्रदान करने वाली हैं। सत्य, अहिंसा, ईमानदारी जैसे मूल्य जिन्हें आज के समय में अप्रासंगिक या ग़ैरज़रूरी मान लिया गया है कुँवर नारायण की कविताओं में उससे हम फ़िर से प्रतिष्ठित होते हुए पाते हैं। कुँवर नारायण कविता का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को स्वस्थ जीवनमूल्यों के प्रति संवेदनशील बनाना तथा हमारी जीवनदृष्टि को उदार और विवेकपूर्ण बनाना मानते हैं। एक साहित्यकार के रूप में वे आक्रमक प्रतिरोध के बजाय उदात्त

और शाश्वत जीवन-मूल्यों को बचाना ज़्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं। एक साहित्यकार के रूप में लड़कर वीरगति पाने से ज़्यादा महत्वपूर्ण वे यह मानते हैं कि उन मूल्यों को बचाया जाए जो जीवन के लिए श्रेष्ठ हों।

कुँवर नारायण की कविताएँ पाठक की आत्मा में हौले-हौले प्रवेश करती हैं और उसे घृणा, हिंसा, साम्प्रदायिकता जैसे भाव त्याग करने का नैतिक साहस प्रदान करती हैं। नैतिक साहस के महत्त्व कोकुँवर जी स्वीकारते हैं। उनकी कई कविताओं में कवि की नैतिकता संबंधी दृष्टिकोण को देखा जा सकता है। 'सम्मेदीन की लड़ाई' जैसी कविता नैतिक साहस के महत्त्व को बताती है। जिस नैतिक साहस की बात कुँवर जी अपनी कविताओं में करते हैं उसका मनुष्य के आत्मिक-विकास से गहरा नाता है। इन कविताओं में अंतर्दृष्टि की उस विरल शक्ति को आसानी से लक्षित किया जा सकता है जो मनुष्य को आत्म-चिन्तन के लिए प्रेरित करती है। इन कविताओं में मनुष्य के बाहरी दुनिया का शोर नहीं अपितु भीतर की दुनिया का संगीत सुनायी पड़ता है। कुँवर नारायण की कविता मनुष्य के भीतर की दुनिया को थोड़ा और सुंदर, थोड़ा और विस्तृत करती है। ध्यातव्य है कि भौतिक विकास की प्रतिस्पर्द्धा में शामिल मनुष्य ने अपनी भीतर की दुनिया में झाँकना लगभग बंद कर दिया है। इस भीतर की दुनिया का संबंध मनुष्य की इन्द्रियों से न होकर उसकी अंतरात्मा से है। कुँवर नारायण की कविताओं का पाठक महसूस करता है कि भीतर की यह दुनिया बाहर की दुनिया से कई गुना ज़्यादा बड़ी और सार्थक जीवन जीने के लिए ज़्यादा ज़रूरी है। जीवन की संश्लिष्टता और जटिलता को व्यक्त करती ये कविताएँ सुखी जीवन से ज़्यादा ज़रूरी सार्थक जीवन को मानती हैं। जीवन की सार्थकता के सवाल वैचारिक स्तर पर पाठकों को आंदोलित करते हैं।जीवन के कई सन्दर्भ जिसे उपभोक्तावाद ने हाशिये पर धकेल दिया है उसे इन कविताओं में केन्द्रीय स्थान प्राप्त हुआ है। सार्थक जीवन की इस बहस का दायरा बहुत विस्तृत है।

'प्रेम' एक ऐसा ही भाव है जिसे महत्वकांक्षाओं की होड़ में आज के मनुष्य ने विस्मृत कर दिया है। वर्तमान समय में हमें अपने आसपास 'प्रेम' की उदात्तता और गरिमा को महसूस करने वाला हृदय नहीं दिखाई देता। कुँवर जी की कविताओं में प्रेम का उदात्त स्वरूप हमें देखने को मिलता है। हिंसा और क्रोध को इन कविताओं में नकारा गया है और प्रेम को उसकी पूरी गरिमा के साथ प्रतिष्ठित किया गया है। ये कविताएँ हमारे समय की ज़रूरत हैं। आज जब अपने चारों तरफ़ मनुष्य ने हिंसक शब्दावलियों का शब्दकोश तैयार कर लिया है तब ऐसे में कुँवर जी की कविताएँ उस भाषा का विकल्प सुझाती हैं जिसे हम मनुष्य की संवेदनाओं को पोषित करने वाली भाषा कह सकते हैं।कुँवर नारायण कविता में इस हिंसात्मक दुनिया का प्रतिपक्ष रचने की शक्ति पाते हैं।कुँवर जी की चिंता के केंद्र में सम्पूर्ण मनुष्य जाति है। इसलिए उनकी कविताएँ किसी एक देश या स्थान के मनुष्य को संबोधित करती कविताएँ नहीं हैं। इन कविताओं में वे जीवन-मूल्य निहित हैं जिनमें विश्व-मानव की चिंता है। ये मूल्य कुँवर जी की कविताओं को न सिर्फ़ विश्वजनीन बनाते हैं बल्कि उन्हें काल और स्थान की भौतिक अवधारणा से पृथक कर कालजयी बनाते हैं। आज विश्व की विभिन्न भाषाओं में कुँवर जी की कविताओं के अनुवाद होने की भी यह महत्वपूर्ण वजह है कि उनकी कविताओं का फ़लक इतना विस्तृत है कि किसी भी देश और काल का मनुष्य उसे अपने लिए प्रासंगिक पाता है। 'अहिंसा' आज सिर्फ़ भारत की ज़रूरत नहीं है। जब कुँवर नारायण अपनी कविताओं में 'गाँधी' और 'पाब्लो नेरुदा' जैसी शक्सियत को याद करते हैं तो दरअसल उन जीवन-मूल्यों को याद कर रहे होते हैं जिनके लिए गाँधी और नेरुदा अलग-अलग काल और परिस्थितियों में प्रतिबद्ध रहे।जीवन की जटिलता उनके समक्ष आज के मनुष्य से कहीं ज़्यादा थी पर उन्होंने उन मूल्यों का साथ नहीं छोड़ा जो मनुष्यता की आधारशिला हैं।शक्तिशाली की जो परिभाषा हमने बनायी है, कुँवर जी की कविताएँ उसपर पुनर्विचार का रास्ता सुझाती हैं। अगर विध्वंस की शक्ति का होना ही शक्तिशाली होने की कसौटी है तो इसपर पुनर्विचार की आवश्यकता है। 'कुमारजीव' जैसी काव्यकृति के माध्यम से कुँवर

नारायण ने रचनात्मक ढंग से युद्ध की मानसिकता और बौद्धिक-चेतना के बीच का फ़र्क़ दिखलाया है।इन कविताओं का पाठक अतीत के जीवनानुभवों से युद्ध की निरर्थकता को जान सकता है। कुँवर जी अपनी कविताओं के माध्यम से युद्ध और नफ़रत के सभी तर्कों को खारिज़ करते हैं।

कुँवर जी की कविताओं के अनुशीलन के पश्चात यह कहा जा सकता है कि मनुष्य में और मनुष्यता में उनकी गहरी आस्था है।विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी मानवीय जीवन के प्रति कवि संभावनाशील नज़र आते हैं।मनुष्य-मनुष्य के बीच की दूरी कम से कम हो इस प्रयास को कुँवर जी की कविताओं में लक्षित किया जा सकता है।ये कविताएँ एक मनुष्य से दूसरे मानुष्य को जोड़ती हैं। कवि चाहते हैं कि मनुष्य-मनुष्य के बीच सहज रिश्ता बन सके। वे दो विपरीत विचारों में भी संवाद का रास्ता तलाशते हैं।'नचिकेता' और 'वाजश्रवा' के बीच केवल दो पीढ़ियों का अंतर नहीं है उनके बीच दो मानसिकताओं का अंतर है। वे दोनों चरित्र एक दूसरे के विपरीत मानसिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं।परन्तु दोनों के दृष्टिकोण को कुँवर जी ने 'आत्मजयी' और 'वाजश्रवा के बहाने' में व्यक्त किया है।कुँवर जी मनुष्य को एक तार्किक प्राणी के रूप में देखने के आग्रही हैं।

अपनी कविताओं में भाषा के प्रयोग को लेकर कुँवर जी बहुत सचेत रहे हैं।कुँवर नारायण के लिए किसी भी शब्द का केवल अर्थ नहीं बल्कि वह समूची अनुभव-यात्रा मायने रखती है जिससे होकर वह शब्द हम तक पहुँचा है।शब्द इनकी कविता की संरचना में इस तरह प्रयुक्त होते हैं कि वे अपने सामान्य अर्थ से बड़े आशय को अभिव्यक्त करने लग जाते हैं। कवि जिस तरह वैचारिक स्तर पर स्वतंत्रता के हिमायती हैं ठीक उसी तरह भाषिक स्तर पर भी स्वतंत्रता को कुँवर नारायण ज़रूरी मूल्य के रूप में स्वीकारते हैं।विचारों की अभिव्यक्ति के लिए किसी भी भाषा के शब्द से उन्हें परहेज़ नहीं है।छंदों और अलंकारों को कुँवर जी काव्य का बाहरी गुण मानते हैं।

हालाँकि इनकी कविताओं में इनके सुंदर प्रयोग को लक्षित किया जा सकता है परन्तु छंद और अलंकार के बोझ तले कुँवर जी की कविता दबी नहीं है।कुँवर नारायण के जीवन-दर्शन और भाषा-दर्शन दोनों की झलक उनकी कविताओं में साथ-साथ मिलती है।